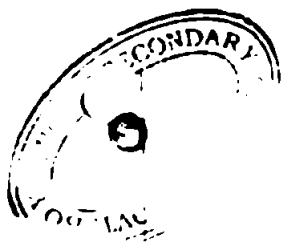

SECONDARY

code- 31

261

खून से बनी गंगा।

रिश्ता था हमारा अनमोल।
शामिल थे हम सब उसमें।
पर जा रहा है टूटकर अब
काले गलियों के कोने की ओर।

ना था फर्क बीच हमारा
हिस्सा थे हिंदू- मुसलमान आपस।
गीता- कुरआन थे अच्छा
गंगा- ज़मज़म थे सब साफ।

था जब गंगा में छलकता सा जल।
ले जाते थे बूँद छलकता की, गंगा।
हर बूँद थे लाल- हरे का अनमोल जुड़ता।
हर किनारे में थे मशहूर, वह रिश्ता हमारा

था प्यार और छलकता दिलों में हमारे।
बहते थे भीतर एक प्यार की गंगा।
डूबा था उसमें
जाने के शैतान गहराई में
बंधी थे उसमें वह प्यार के नीचे।

हुआ है सूखा दिल के भीतर के
गंगा में।
हो रहा है कम उसमें प्यार की बूँदें।
जब उठ रहा है वह शैतान जो था नीचे
प्यार की।
हो रहा है वह आज़ाद, अब होंगे क्या-क्या?

फँसाया वह हमें सब उसकी चाल के अंदर।
गिराया हम सब, हे भगवान बचाले हमें
सब!
बनाया वह एक नया नदी हमारे लिए ही
पर थे उसका बूँद खून की हमारा ही।

खोया वह गंगा भीतर हमके दिल से।
उठा एक नदी उसमें था सारा नफ़रत।
लाल हरा तो हुआ जुदा, साथ हम
जिया मारने को आपस, ईश्वर के नाम पर।-

ऐसा शैतान हमेशा और रोया रहता हमेशा
हम मरा आपस हमेशा और खेला हज़ारों-
सपना।
बहती थी यहाँ एक नदी वह प्यार की
अब ना है उसमें पानी उसमें है सिर्फ खून।
कैसा भगवान हमें फिर भी वह गंगा।